सुनील गज्ञाणी की चार कविताओं का राजस्थानी से हिंदी अनुवाद

देश भक्त सैनिकों को समर्पित

(1)

मैं सैनिक नहीं पर अपनी देश भक्ति पे गर्व करता हूँ

ना वर्दी ना तमगे पर देश वासी मन से मान करता हूँ !

मेरा कलेजा नहीं उनसा पर अंतस से प्रेम करता हूँ

भक्ति, भक्त–सी उनकी इस लगन को मैं प्रणाम करता हूँ !

लुका–छिपी खेले मृत्यु से ऐसे वीरों की मैं क्या वर्णन बात करूँ

देश निश्चिंत, बेफिक्र , शीश झुका मैं उन्हें वंदन करता हूँ !

समय , देश भक्ति आज देश सेवा में समायोजित हो गयी

देश खातिर जो शहीद ,उन वीरों का मैं यशगान करता हूँ !

(2)

देश भक्ति सिर्फ नारों से ही जन्मती नहीं

जैसे प्रेम मन में कहने से पनपता नहीं है !

कोख से ही जन्मे वो सपूत इस धरा पर

माँ से प्रेम सिखाए ऐसा कोई गुरु नहीं है !

हर एक वासी के हृदय जन्मा रहता है देश

ज्यूं धूणा साधु का सुलगता पर दिखता नहीं है !

(3)

इस भौम की वीर कथा

क्या बताऊं वीर कथा

नित्य इसके शीश झुकाऊं

अभिमान की है हर कथा !

मखमल जैसे धोरे बिछे

कण–कण इसका महान

प्रेम–न्यौछावर भक्ति भाव से

सराहने वाली सारी कथा !

बोले कागा गाये मोरनी

दौड़े समय बवंडर

क्या गांव क्या शहर में

द्वंद–चिंता बन गयी प्रथा !

होती बाते गांव के भीतर

खो गया मानव भरे दिन में

गांव मिलता जाये शहरों में

कहे किसे गांव अपनी व्यथा !

सपने देखे हथेली भर–भर

नहीं सच हुए अंश भर

उम्र पूरी आशा करते कटे

सुख–दुःख जीवन की प्रथा !

वाणियां–कहावते खूब भरी

धूणा चेतन संतों की मस्ती

भांति–भांति उनके जलसे

श्रद्धा, वंदन अशेष कथा !

जलियावाला बाग़

(4)

रौंगटे आज भी खड़े हो जाते हैं

भले ही सौ वर्ष पुराना काण्ड हो गया

दिवंगत वे बच्चे भी हो गए

जिनके के दूध के दाँत भी नहीं टूटे थे !

बाग़, जलियावाला बाग़ सिर्फ नाम

बाकी तो श्मशान बन गया उस समय

फसल कटे जैसे लाशें बिछ गयी

बैशाखी उत्सव मातम में ढल गया

वो लाशें इंसान थी जो

सिर्फ दस मिनट पहले

फसल काटने का उत्सव बैसाखी

मातम में बदल गयी

कुवां जो प्यास बुझाता था

जैसी दफ़न हो गया लाशों की ढेर से !

जनरल ओ डायर उस समय मनुष्य योनि में नहीं था

मगर मनुष्यता

सिहरन दौड़ पड़े जिस कांड से

पूरे देश में देश की खातिर

और प्रगाढ़ हो गयी

देश की आज़ादी के लिए

देश केसम्मान के लिए

कविवर टैगोर ने वापिस लौटा दी नाईटहुड उपाधि

और स्थापित हो गयी असहयोग आंदलोन की नीव

ओ डायर , उधम सिंह के कलेजे में चुभ गया

मगर , ह्रदय में पनप गया ये घाव

बारह वर्ष के बच्चे भगत सिंह के नस–नस में !

ये नर संहार अविस्मरणीय है

वो फफकती निशानियां

आज भी कलेजे को तड़फा जाती है

किस बन्दे को पता था कि

वो सभा विश्राम होगा ज़िंदगी का

और रोलेट एक्ट के खिलाफ होना अर्थात

मृत्यु का सामना

विश्राम ,यात्रा का कभी थमना नहीं होता !

सौ वर्ष बीत गए

मगर मन आज भी पूरे देश का विचलित हो उठता है

और होगा भी

अंतस से

दिमाग से वो इतिहास कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा

जिस देश की मिट्टी में बेहिसाब खून मिश्रित है

कल हम नहीं थे जब ये नरसंघार इतियास बना था

आज स्मरण कर रहे है

कल जब हम नहीं होंगे

तब भी इन वीरों को

ऐसे ही सदा वंदन होता रहेगा

शीश झुकाया जाता रहेगा

एक गर्व के साथ !

सुनील गज्ञाणी, G-Mail: sgajjani@gmail.com